Page – 01

Course :- B.T.
Social Science
Topic :- Diagnostic Evaluation and Remedial Teaching

निदानात्मक मूल्यांकन एवं उपचारात्मक शिक्षण

सामाजिक विज्ञान अध्ययन में उपलब्धियों एवं उनके परिणामों से कमजोर छात्रों की जानकारी हो जाती है। फिर भी इस बात का पता नहीं चल पाता है कि उनकी कमजोरियों के पीछे क्या कारण रहे हैं अथवा उनकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयाँ (Problems) क्या थीं? इस प्रकार की जानकारी करना ही निदान (Diagnosis) कहलाता है।

शिक्षा शब्दकोश के अनुसार "निदान उपयुक्त उपचारात्मक अथवा उच्च अधिगम कार्यों को निर्धारित करने के लिये द्वारा उसके अधिगम को सुसाध्य बनाने के उद्देश्य से एक विशेष विषय में आवश्यक कार्यों के पदानुक्रम की उसकी स्थिति को विश्लेषित करके एक छात्र की विद्यमान क्षमताओं को निर्धारित करने की एक प्रक्रिया है।"

सामाजिक अध्ययन अधिगम शिक्षण के दौरान जब किसी छात्र को कठिनाई होती है अथवा परीक्षा में असफल हो जाता है तब यह ज्ञात करना आवश्यक हो जाता है कि सामाजिक अध्ययन के किस अनुभाग/खण्ड में छात्र को अधिगम में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षक अब छात्र के कठिनाईपूर्ण अनुभाग/खण्ड की समस्या के कारणों को खोजता है तत्पश्चात उनका निवारण या निराकरण करके अधिगम पथ पर अग्रसर होने के लिये सहायता देता है।

Dr. [illegible] B.Ed

एक सफल शिक्षक को 'निदान' के विभिन्न स्तरों का ज्ञान आवश्यक होता है, अर्थात जिस प्रकार एक सफल चिकित्सक अपने रोगी के सफल चिकित्सा से एवं उसका निदान के विभिन्न चरणों को पूरा कर रोगी का चिकित्सा करते हैं ठीक इसी प्रकार एक सफल सामाजिक विज्ञान शिक्षक को भी अपने समस्याग्रस्त छात्रों के सफल शिक्षण के लिए निदान के स्तरों को ग्रहण कर शिक्षण कार्य का निष्पादन करना चाहिए। ये चरण या स्तर निम्नलिखित हैं—

(1) समस्याग्रस्त छात्रों की पहचान (Identification of Problem Students) — सर्वप्रथम सामाजिक अध्ययन के अन्तर्गत समस्या ग्रस्त छात्रों की पहचान की जाती है।

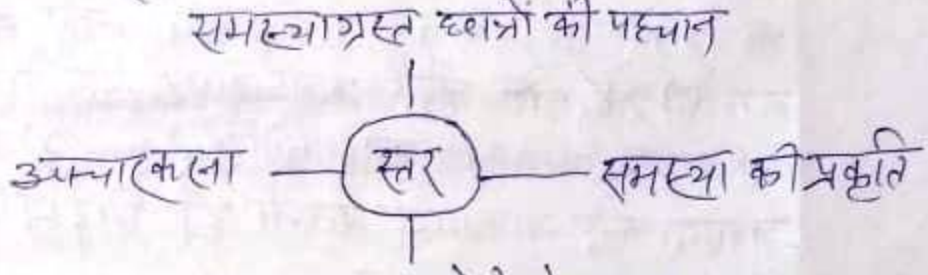

(2) समस्या की प्रकृति (Nature of Problem) — इसके उपरान्त छात्रों द्वारा जिन खण्डों में त्रुटि हुई है उनकी प्रकृति की जाँच की जाती है।

(3) समस्या उत्पन्न होने के कारण (Causes of Problem) — छात्रों की त्रुटियों की जाँच के उपरान्त समस्या उत्पन्न होने के कारण क्या हैं उसे जाँचा जाता है।

(4) उपचार (Treatment of Problems) — समस्या की जाँच के उपरान्त उनका उपचार किया जाता है।

निदानात्मक परीक्षण (Diagnostic Test) -

सामाजिक अध्ययन में छात्रों की समस्याओं तथा उससे सम्बन्धित त्रुटियों की जानकारी प्राप्त करने हेतु जो परीक्षण/परीक्षा आदि का प्रयोग किया जाता है उसे निदानात्मक परीक्षण/परीक्षा कहते हैं।

'शिक्षा-शब्दकोश' के अनुसार, "निदानात्मक परीक्षण विशेष

रूप से मे छात्रों की कमजोरियों को सुनिश्चित करने के लिए एक सीमित ~~विषय क्षेत्र~~ विषय-क्षेत्र अथवा सम्बन्धित उपलब्धि के मापन के लिए उद्दिष्ट एक परीक्षा है।"

सामाजिक अध्ययन/विज्ञान मे निदानात्मक परीक्षण करने के निम्नांकित उद्देश्य होते हैं —

(1) छात्रों के सामाजिक अध्ययन के किसी क्षेत्र विशेष/प्रकरण के अध्ययन/अधिगम मे कठिनाइयों/अक्षमताओं का निदान खोजना।

(2) छात्रों के उपचारात्मक शिक्षण के लिये उपयुक्त कार्यक्रमों के लिये नियोजन में मदद करना।

(3) छात्रों की अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों के निदान से सम्बन्धित शिक्षकों के अनुदेशात्मक कार्य में संशोधन करना।

– निदानात्मक परीक्षण की रचना –

सामाजिक अध्ययन शिक्षण में छात्रों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं का निदान खोजने के लिये देश व विदेशों में विभिन्न प्रामाणिक 'निदानात्मक परीक्षण' तैयार किये गये हैं, खरीद करके प्रयोग में लाया जाता है। परन्तु यह महँगा पड़ता है। अतः सामाजिक अध्ययन शिक्षक को स्वयं उसकी रचना में दक्ष होना आवश्यक है। इसकी रचना निम्नलिखित पदों मे बाँटा गया है —

'पद'

↓

नियोजन | रचना | प्रशासन | मूल्यांकन | व्याख्या

नियोजन (Planning) — निदानात्मक परीक्षण की रचना मे सामाजिक विज्ञान/अध्ययन शिक्षक को सर्वप्रथम निम्नलिखित तथ्यों ~~का~~ का नियोजन आवश्यक है —

(1) अधिगम की कठिनाइयों का ज्ञान — निदानात्मक परीक्षण की रचना हेतु शिक्षक को सर्वप्रथम विषय के (उन)

— P.T.O.

(हस्ताक्षर) 4/06/2020

उन क्षेत्रों में अधिगम की कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त करना चाहिए। इसके लिये निम्न तथ्यों से जानकारी प्राप्त की जाती है—

(i) कक्षा में अभ्यास कार्य तथा किया गया अभ्यास कार्य।
(ii) छात्र का कक्षा में किया जानेवाला व्यवहार।
(iii) उपलब्धि परीक्षणों के निष्कर्ष।
(iv) कक्षा के छात्रों से पूछे गए प्रश्न और उत्तर।
(v) गृह-कार्य को छात्र द्वारा पूरा करना।

(2) समस्यात्मक क्षेत्र को स्पष्ट करना—छात्र सामाजिक विषय के किस क्षेत्र में समस्या का अनुभव करता है अथवा असफल होता है। इससे इकाई या उप-इकाई का चयन कर लिया जाता है और निदानात्मक परीक्षण में उन्हीं तथ्यों पर बल देते हुए प्रश्नों की रचना की जाती है।

(3) विषय-वस्तु विश्लेषण—निदानात्मक परीक्षण की रचना में सामाजिक विषय की एक इकाई की विषय-वस्तु का विश्लेषण करके निम्नलिखित तथ्यों को ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है।

(i) प्रविष्टि व्यवहार - इसमें ज्ञात किया जाता है कि छात्र इकाई/उप-इकाई के विषय में पहले से कितना ज्ञान रखता है।

(ii) अन्तिम व्यवहार - अन्तिम व्यवहार में ज्ञात किया जाता है कि इकाई/उपइकाई के शिक्षण-अधिगम के पश्चात् छात्र में किस प्रकार के व्यवहार परिवर्तन होंगे।

(iii) परीक्षण-प्रश्नों का चयन—निदानात्मक परीक्षण में परीक्षण प्रश्नों का चयन करना अति महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इन प्रश्नों का उद्देश्य विषय-वस्तु की जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि छात्रों की विषय के अन्तर्गत होने वाली कठिनाइयों तथा कमजोरियों का पता लगाना होता है। इसमें लघु-उत्तरीय, अति लघु-उत्तरीय प्रश्नों को रखना उचित होता है।

परीक्षण प्रशासन—निदानात्मक परीक्षण का प्रशासन कैसे होगा, इस पर प्रारम्भ से ही विचार विमर्श कर कर लेना चाहिए—

(i) परीक्षण प्रश्नों की अंकन विधि।

पांडेय

- Contin

(ii) परीक्षण प्रशासन हेतु समय सीमा ।

(iii) परीक्षण परिणामों की व्याख्या की प्रक्रिया ।

(iv) परीक्षण देने हेतु एवं परीक्षण के उत्तर देने से सम्बन्धित छात्रों को निर्देश ।

रचना (Construction) —— नियोजन स्तर पर लिये निर्णयों के दृष्टिगत निदानात्मक परीक्षण की रचना की जाती है ——

(i) प्रश्नों की उत्तर-कुंजी की रचना ।

(ii) प्रश्नों के उपयुक्त प्रकारों का चयन ।

(iii) आदर्श उत्तरों की रचना ।

(iv) प्रश्न-पत्र में आवश्यक निर्देश एवं समयावधि की व्यवस्था ।

प्रशासन — (Administration) ~~रचना के~~ (निदानात्मक परीक्षण) (प्रशासन) में निम्नलिखित बातों पर विशेष बल देना चाहिए ——

(i) समय-सीमा की समाप्ति पर छात्रों को लिखने से रोक देना चाहिए ।

(ii) छात्रों से प्रश्न-पत्र सहित उत्तर-पत्रक एकत्र कर लेना चाहिए ।

(iii) निर्देश छात्रों को स्पष्ट रूप से देकर समझा देना चाहिए ।

मूल्यांकन (Evaluation) — निदानात्मक परीक्षण के प्रशासन (Administration) के पश्चात् इसका मूल्यांकन किया जाता है —

(i) कटिंग एवं ओवरराइटिंग को मान्यता नहीं देना चाहिए ।

(ii) मूल्यांकन में उत्तर-कुंजी तथा आदर्श-हल की सहायता से अंकन करना चाहिए ।

परिणामों की व्याख्या (Interpretation of Result) — निदानात्मक परीक्षण में परिणामों की व्याख्या अग्रलिखित रूपों में —

Oxford

[illegible]

— Cont —

होना चाहिए —

(i) प्राप्त जानकारी के आधार पर छात्रों द्वारा कृत त्रुटियों, उनकी कमजोरियों एवं उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली कठि-नाइयों की प्रकृति को भी जानना आवश्यक है।

(ii) परीक्षण से प्राप्त उत्तरों की उचित व्याख्या करके छात्रों की कमजोरियों एवं कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

निदानात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ — इस प्रकार के मूल्यांकन के निम्नलिखित विशेषताएँ हैं —

(1) इसके लिए पूर्व निर्धारित समयसीमा लागू नहीं होती है।

(2) इससे छात्रों की कठिनाइयों अथवा कमजोरियों को दूर करने के लिये उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करने में सहायता मिलती है।

(3) इससे सामाजिक विषय के किसी क्षेत्र विशेष अथवा समस्या में छात्रों की कठिनाइयों या कमजोरियों की जानकारी आसानी/सरलता से मिल जाती है।

(4) आवश्यकतानुसार इनका एक से अधिक बार भी आयोजन किया जा सकता है।

(5) यह उचित परामर्श, निर्देशन एवं उपचारात्मक शिक्षण हेतु सम्यक ~~सुझाव~~ उपाय सुझाने में सहायक है।

"उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)"

अर्थ (Meaning) — शिक्षा-शब्दकोश के अनुसार "उपचा-रात्मक शिक्षण एक छात्र की कमी निम्न सामान्य योग्यता के कारण नहीं, को अंशतः अथवा पूर्णतः दूर करने के लिये उद्दिष्ट विशेष शिक्षण है।"

अर्थात् निदानात्मक परीक्षणों के द्वारा छात्रों की समस्या या कठिनाई को ज्ञात होने के उपरान्त उसका हल किया जाने वाला शिक्षण कार्य है। इसे ही उपचारात्मक शिक्षण कहा जाता है।

— P.T.O —

उपचारात्मक शिक्षण के लिये समस्याओं का स्वरूप (Nature/Forms) of Difficulties for Remedial Teaching) -

(1) सामान्य समस्याएँ/कठिनाइयाँ एवं उनके निदान - अगर अधिकतर छात्र सामाजिक विषय के शिक्षण-अधिगम मे किसी कक्षा मे कोई कठिनाई का अनुभव करते हैं, तो इसे सामान्य समस्या/कठिनाई कहते है। इस समस्या के निदान के लिए कई उपायों की व्यवस्था की गई है।

(i) शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने में श्रव्य-दृश्य उपकरणो, अभ्यास कार्य, एवं प्रायोगिक कार्य को अधिक महत्त्व दिया जा सकता है।

(ii) शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए अधिगम की अन्य विधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

(2) विशिष्ट समस्याएँ और उनके निदान के उपाय - अगर कक्षा के अधिकतर छात्र सामाजिक विषय के शिक्षण-अधिगम में व्यक्तिगत कठिनाइयाँ सामने आती हैं, तो वे विशिष्ट समस्याएँ/कठिनाइयाँ कहलाती है। इन समस्याओं हेतु व्यक्तिगत वैयक्तिक (individual) एवं विशिष्ट उपाय किये जाते हैं। छात्रों की अधिगम क्षमता के विकास हेतु अतिरिक्त शिक्षण, उपयुक्त विधियों एवं तकनीकों की सहायता से किया जाता है।

(3) शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित से सम्बन्धित समस्याएँ एवं उपचार के उपाय — यदि छात्र के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में कमी के कारण अधिगम मे कठिनाई आती है, तो उसके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ठीक करने के लिए उपचार-गृहों में उपचार हेतु भेजा जाता है।

(4) अन्य कठिनाइयाँ एवं उनके निवारण के उपाय — गृहकार्य न कर पाना, घर के अन्य कार्यों में लगे रहने से छात्र द्वारा विषय-विशेष को न दोहराना या स्वाध्याय न करना आदि कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। समयाभाव के कारण उपरोक्त कारणों के निवारण हेतु छात्र के अभिभावकों से सम्पर्क करके उनका अपेक्षित सहयोग लेना।

— P.T.O —

सामाजिक अध्ययन/विषय में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था——

सामाजिक विषय में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था निम्न प्रकार से की जाती है —

(1) स्व-अनुदेशित शिक्षण (Auto-instructional Teaching) — इस प्रकार के शिक्षण में छात्रों को स्व-अनुदेशन द्वारा ही अपनी समस्याओं का निदान करना पड़ता है और उन्हें किसी प्रकार का शिक्षक सहयोग प्राप्त नहीं होता है। छात्रों को विषयगत जो भी समस्याएँ/कठिनाइयाँ होती है, उन सब को ध्यान में रखकर 'अधिगम पैकेज' के रूप में या कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम (Computer Software Programme) के रूप में छात्र विशेष को उपलब्ध करा दी जाती है। फिर उन छात्र अनुदेशनों को ग्रहण करके अपनी समस्याओं का निदान स्वयं ही करते हैं।

(2) कक्षा शिक्षण (Class-Teaching) — सामाजिक विज्ञान अध्ययन में उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था में शिक्षण के वर्तमान स्वरूप और संरचना में कोई परिवर्तन नहीं किया जाता है। यदि छात्र किसी विषय-वस्तु खण्ड को समझने में कठिनाई समझ रहे हैं या उन्हें जो पढ़ाया जा रहा है, उससे सम्बन्धित अपेक्षित पूर्व ज्ञान उसको नहीं है, तो शिक्षक छात्र को पुनः पाठ का अधिगम कराता है। पहले पढ़ाए गये पाठ को पुनः पढ़ाता है और छात्रों की अधिगम सम्बन्धित कठिनाइयों को दूर करता है। इस प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण द्वारा शिक्षक कक्षा के समस्त छात्रों की एक सदृश कठिनाइयों को दूर करने के लिए समन्वित प्रयास कर सकता है।

(3) अनौपचारिक शिक्षण (Informal Teaching) विषय-विशेष सम्बन्धित अनौपचारिक शिक्षण गति विधियों को औपचारिक शिक्षण के साथ समन्वित कर दिया जाता है, तो जिन छात्रों को उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता है, उनकी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों/समस्याओं

04/06/2020

P.T.O.

समस्याओं को कुछ हद तक दूर किया सकता है। सामाजिक विज्ञान अध्ययन के कार्यक्रमों में भाग लेना, गणित के मॉडल बनाना, गणित प्रदर्शनी तथा अन्य विभिन्न प्रकार की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भाग लेना आदि विभिन्न अनौपचारिक गतिविधियाँ हैं जिनका प्रयोग उपचारात्मक शिक्षण में किया जाता है।

(4) ट्यूटोरियल शिक्षण (Tutorial Teaching) — उपचारात्मक शिक्षण में 'ट्यूटोरियल शिक्षण' महत्वपूर्ण है। इसमें छात्रों की सभी व्यक्तिगत समस्याओं और शिक्षण की जटिलताओं पर विशेष बल दिया जाता है। इसके तीन भाग होते हैं —

(i) समूह ट्यूटोरियल शिक्षण — समूह ट्यूटोरियल शिक्षण में कुछ छात्रों को ऐसे समूहों में बाँट दिया जाता है। जिनकी विषय सम्बन्धी एक सी कठिनाइयाँ / समस्याएँ / कमजोरियाँ होती हैं। और प्रत्येक समूह को एक शिक्षक या अलग शिक्षकों द्वारा अलग-अलग रूपों में उनकी कमजोरियों / कठिनाइयों से सम्बन्धी हिसाब से शिक्षण प्रदान किया जाता है। प्रत्येक ट्यूटोरियल समूह का इंचार्ज एक ट्यूटर होता है। इसमें छात्रों की समस्याओं को समयानुसार सामूहिक रूप हल किया जाता है। इसमें एक बात का विशेष ध्यान दिया जाता है कि छात्र जिस कौशल से ज्ञान को अर्जित कर पाते हैं उन्हें उसी कौशल द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है।

(ii) पर्यवेक्षित ट्यूटोरियल शिक्षण – इस प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण में छात्रों को स्वयं के ही प्रयत्नों के द्वारा अपनी अधिगम सम्बन्धी कठिनाइयों/समस्याओं को दूर करने होता है। छात्रों को विषय के जिस पक्ष में कठिनाई का अनुभव होता है वह उस पक्ष को पढ़कर लिखकर सामान्य बनाने का प्रयास करते हैं, अभ्यास कार्य पुनरावृत्ति, स्वाध्याय आदि की सहायता लेते हैं। ऐसा करते समय उन्हें अपने विषय अध्यापकों की पर्याप्त मार्गदर्शन तथा आवश्यकतानुसार वांछित सहायता भी प्राप्त रहती है।

(iii) वैयक्तिक ट्यूटोरियल (Individual Tutorial Teaching) शिक्षण — इस प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण में छात्रों की वैयक्तिक/व्यक्तिगत अधिगम कठिनाइयों/समस्याओं और कमजोरियों के अनुरूप वैयक्तिक ट्यूटोरियल शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इसमें सभी छात्र अपनी-अपनी अधिगम गति योग्यता और क्षमताओं के अनुरूप जैसी वांछित सहायता, व्यक्तिगत ध्यान और पुनर्बलन की अपेक्षा करते हैं। वह सभी उन्हें वैयक्तिक रूप रूप से भलीभाँति प्रदान किया जाता है। जिससे कि उनकी व्यक्तिगत कठिनाइयों का निवारण किया जा सके।

उपचारात्मक शिक्षण के लाभ (Advantages) — इसके लाभ होते हैं जो निम्नलिखित हैं —

(1) उपचारात्मक शिक्षण से छात्रों की क्षमताएँ विकसित होती हैं परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास होने लगता है।

(2) इस शिक्षण से छात्रों की अधिगम कठिनाइयों/समस्याओं/कमियों का निवारण हो जाता है।

(3) उपचारात्मक शिक्षण में छात्रों की वैयक्तिक कमियों को वैयक्तिक रूप से दूर किया जाता है। इससे छात्रों को विशेष लाभ होता है। भविष्य में उन्हें कोई विषय-सम्बन्धी नहीं होती है।

P.T.O

"सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन"

(CCE — Continuous & Comprehensive Evaluation)

वर्तमान समय में मूल्यांकन की प्रणाली लिखित परीक्षा प्रणाली है जिसके द्वारा संकलित आँकड़ों के आधार पर छात्रों का प्रगति पत्र तैयार किया जाता है, परन्तु उसमें पूर्णतया सत्यता, विश्वसनीयता के आधार पर व्यक्ति का पूर्ण विकास हो पाना असम्भव है। अतः इस त्रुटि/त्रुटि को सुधारने हेतु कई प्रकार की मूल्यांकन प्रणालियों ~~का~~ जैसे सम्प्रेषण अर्थात् जी.डी., मौखिक परीक्षण इत्यादि को सम्मिलित करने की बात है।

शिक्षा आयोग (1964-66) के अनुसार "मूल्यांकन एक निहित निरन्तर प्रक्रिया के साथ-2 शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है जिसका सीधा सम्बन्ध शिक्षा के मूल उद्देश्यों से जुड़ा है। यह छात्रों के अध्ययन और अध्यापकों की परीक्षण प्रणाली को को अत्यधिक प्रभावित करता है। मूल्यांकन सफलता असफलता की जाँच-परख के साथ-साथ शिक्षा में सुधार लाने में भी सहायता करता है। मूल्यांकन द्वारा एवं प्रमाणपत्र इकट्ठे किये गये हैं, जिससे यह सिद्ध होता है कि छात्रों का विकास वांछित दिशा में निरंतर हो रहा है। अतः मूल्यांकन प्रणाली का शत-प्रतिशत शुद्ध एवं विश्वसनीय तथ्यों पर आधारित होना चाहिए।'

उपरोक्त विचार को दृष्टिगत करते हुए आधुनिक मूल्यांकन पद्धति का विकास किया गया है जिसमें सतत एवं समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया का निष्पादन होता है। 'सतत एवं समग्र मूल्यांकन (CCE) से अभिप्राय एक ऐसी ~~निरंतर~~ 'नियमित-निरंतर' और व्यापक मूल्यांकन पद्धति से है, जिसमें विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के सभी पक्षों को सम्मिलित किया गया है। सतत से अभिप्राय नियमित मूल्यांकन-इकाई परीक्षणों की आवृत्ति, अधिगम प्रक्रिया के अन्तरालों का विश्लेषण, संशोधन के उपाय, पुनर्परीक्षण के ~~अवसर~~ तथा शिक्षक

— P.T.O —

एवं विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिये जानकारी प्रदान करना है। समग्र से अभिप्राय विद्यार्थी के विकास के दोनों अर्थात शैक्षणिक/शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक पक्षों को सम्मिलित करना है। सतत तथा व्यापक मूल्यांकन-आधुनिक मूल्यांकन पद्धतियों को निम्न आलेख से भली प्रकार समझा जा सकता है—

मूल्यांकन पद्धतियाँ
-(Modern (Evaluation Patterns))

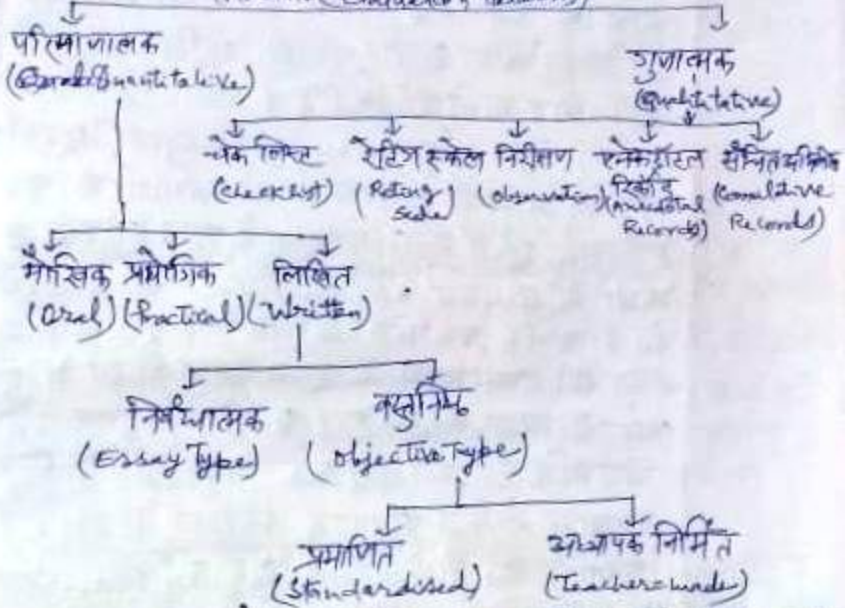

- परिमाणात्मक (Quantitative)
  - मौखिक (Oral)
  - प्रायोगिक (Practical)
  - लिखित (Written)
    - निबंधात्मक (Essay Type)
    - वस्तुनिष्ठ (Objective Type)
      - प्रमाणित (Standardised)
      - अध्यापक निर्मित (Teacher made)
- गुणात्मक (Qualitative)
  - चेक लिस्ट (Checklist)
  - रेटिंग स्केल (Rating Scale)
  - निरीक्षण (Observation)
  - एनेकडोटल रिकॉर्ड (Anecdotal Records)
  - संचित अभिलेख (Cumulative Records)

भारत में सतत एवं समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया प्राथमिक कक्षाओं में पिछले कई वर्षों से चल रही है। प्राथमिक कक्षाओं में प्रत्येक विषय का आकलन दक्षताओं एवं कौशलों के आधार पर किया जाता है। पढ़ाई में सुधार के लिए शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है जिसमें प्रत्येक बच्चे को सीखने का अवसर प्रदान किये जाते हैं। अपने अनुभव एवं क्षमता के अनुसार स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया को प्राथमिक कक्षाओं में विशेष स्थान दिया गया है। इनके प्रयोगों के आधार पर लगातार और निरंतर मूल्यांकन ही एक मात्र सार्थक मूल्यांकन है जिसमें विद्यार्थी की गुणवत्ता का आकलन समय-2 पर किया जाता है।

— P.T.O —

2/06/2020

पहली और दूसरी कक्षा में लिखित परीक्षा के स्थान पर दिन-प्रतिदिन के कार्यों के आधार पर बच्चों का आकलन व मूल्यांकन किया जाता है। अध्यापन (Teaching) और अध्ययन (Learning) को सार्थक और आनंदप्रद बनाने के लिये परीक्षा के कुप्रभावों से बचने के लिये इन कक्षाओं को लिखित परीक्षा से मुक्त रखा गया है।

कक्षा तीसरी से पाँचवी तक शिक्षण की समस्त क्षमताएँ व्यवहार और कौशल को हम स्कूली पाठ्यचर्या के से विकसित करना चाहते हैं। इसी लिए इन कक्षाओं में मौखिक और लिखित परीक्षाओं के आधार पर आकलन किया जाता है। बच्चों तथा अभिभावकों इसकी जानकारी दी जाती है ताकि उन्हें अपने अध्ययन क्षेत्र को समझने में मदद मिले। इसीलिए कक्षा तीसरी से सतत और समग्र इन दोनों पक्षों के माध्यम से विद्यार्थी का मूल्यांकन-फॉरमेटिव ('रचनात्मक' Formative Evaluation-F.E) तथा समेटिव (संकलित) (Summative-Evaluation-S.E.) मूल्यांकन के रूप में किया जाता है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE.) ने शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं सुदृढ़ता लाने के हेतु मूल्यांकन के लिए CCE सी० सी० ई० पद्धति अक्टूबर-2009 से कक्षा नौ एवं दश में लागू की। इस पद्धति में कक्षा नौ और दश के विद्यार्थियों के अधिगम को सतत एवं समग्र मूल्यांकन के माध्यम से विद्या- ... होगा न कि किसी अन्य बाहरी परीक्षा तन्त्र में ही मूल्यांकन कक्षा नौ के द्वारा। इस पद्धति में विद्यार्थी का मूल्यांकन कक्षा नौ एवं दश में शैक्षिक निष्पादन के आधार पर निम्न प्रक्रियानुसार होगा —

(क) रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Evaluation) —

(i) इसके अन्तर्गत शिक्षक विद्यार्थी के विकास का रचनात्मक वातावरण में मूल्यांकन करेंगे।

(ii) इस मूल्यांकन में लिखित परीक्षा के स्थान पर विभिन्न गतिविधियों से विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाएगा

Sd/-

—Cont—

जिसमें, प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार, दृश्य-परीक्षण, परियोजना तथा प्रयोग शामिल है।

(ख) संकलित मूल्यांकन (Summative Evaluation)—

यह मूल्यांकन लिखित परीक्षा के रूप में प्रत्येक विद्यालय द्वारा प्रत्येक सत्र के अन्त में आयोजित किया जायेगा। परीक्षा में स्तर एवं एकरूपता बनाये रखने की दृष्टि से केन्द्रीय माध्यमिक परीक्षा बोर्ड प्रश्न-बैंक समाधान और प्रश्न योजना विद्यार्थियों को उपलब्ध कराएगा। इस मूल्यांकन प्रक्रिया का समय-२ पर बोर्ड के अधिकारियों द्वारा निरीक्षण भी किया जाएगा।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कार्य का निष्पादन निम्न तीन भागों में होगा—

(1) इस प्रकार एक वर्ष में दो सत्र होंगे। प्रत्येक सत्र में दो रचनात्मक (Formative) और एक संकलित (Summative) मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों के निष्पादन को जाँचा जायेगा। मूल्यांकन का आधार अंक न होकर श्रेणी (Grade) होगी।

सत्र	मूल्यांकन का प्रकार	शैक्षणिक सत्र में प्रतिशत का भार	सत्रानुसार समविभाजन	कुल वार्षिक प्रतिशत
प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)	एफ.ए.—1 एफ.ए.—2 एस.ए.—	10% 10% 20%	एफ.ए.—1+2=20 एस.ए.—1=20%	एफ.ए.—40% एस.ए.—60 कुल=100%
द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)	एफ.ए.—3 एफ.ए.—4 एस.ए.—2	10% 10% 40%	एफ.ए.—3+4=20% एस.ए.—2=40%	
प्रथम (अप्रैल से सितम्बर)	एफ.ए.—5 एफ.ए.—6 एस.ए.—3	10% 10% 20%	एफ.ए.—5+6=20% एस.ए.—3=20%	फॉर्मेटिव—40% समेटिव—60% कुल—100%
द्वितीय (अक्टूबर से मार्च)	एफ.ए.—(3)7 एफ.ए.—(4)8 एस.ए.—4	10% 10% 40%	एफ.ए.—7+8=20% एस.ए.—4=40%	

M
2/8/2020

— Sml

(2) सह-शैक्षिक क्षेत्रों जिसमें जीवन-कौशल, दृष्टिकोण एवं ~~मूल्यांकन~~ मूल्य-बोध का मूल्यांकन किया जायेगा। पाँच बिन्दुओं के आधार पर जीवन कौशलों और तीन बिन्दुओं के आधार पर दृष्टिकोण एवं मूल्य-बोध आँका जायेगा।

(3) सह-शैक्षिक क्रियाकलापों में भाग लेने के आधार ~~विद्यार्थियों~~ विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जायेगा। इसके अन्तर्गत पुस्तकालय, वैज्ञानिक, सौन्दर्यपरक गतिविधियों, गोष्ठियों में भागीदारी तथा शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा को आधार बनाया गया है। तीन बिन्दुओं आधार पर ~~इनकी~~ इन सभी क्षेत्रों को ~~मूल्यांकन~~ श्रेणीकृत किया जायेगा।

<u>सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के लाभ</u> —— इस मूल्यांकन के निम्नलिखित लाभ हैं —

(1) सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया को एक ही परीक्षा के स्थान पर अब 12 मूल्यांकनों के माध्यम से आँका जायेगा। इस प्रकार छात्रों का वास्तविक मूल्यांकन हो सकेगा।

(2) इस पद्धति में न केवल शैक्षिक अपितु सह-शैक्षिक क्षेत्रों एवं गतिविधियों को भी जाँचा जायेगा।

(3) इस पद्धति के द्वारा विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति लगाव बढ़ेगा।

(4) इसके द्वारा विद्यार्थियों में उन जीवन-कौशलों को विकसित करने में सहायता मिलेगी जो सृजनात्मक और संतोषप्रद जीवन के लिये आवश्यक हैं।

(5) यह पद्धति विद्यार्थियों को परीक्षा के तनाव से मुक्त रखने में सहायक होगी क्योंकि —

(i) विषयवस्तु को छोटे अंशों में विभक्त करके नियमित अधिगम प्रक्रिया की जाँच की जा सकेगी।

(ii) विविध विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकता और क्षमता के अनुसार विविध उपायों पर आधारित होने के कारण शिक्षा पद्धति अधिक प्रभावशाली होगी।

———— ईति

(iii) विद्यार्थी के प्रदर्शन पर नकारात्मक (negative) टिप्पणियों पर रोक लगेगी। तथा

(iv) अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी सक्रिय रूप से भाग लेगा।

(6) जो विद्यार्थी शैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं कर पाते, किन्तु सह-शैक्षिक क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं, उन्हें प्रोत्साहित किया जायेगा और उनकी क्षमताओं को पहचाना जायेगा।

(7) विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान नियमित रूप से सत्र के प्रारम्भ से ही विभिन्न प्रकार के सुधारात्मक उपायों द्वारा किया जा सकेगा। किन्तु इस पद्धति का यह आशय नहीं निकाला जाना चाहिए कि इसमें छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों को कम किया जायेगा। विद्यार्थियों को शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन तो करना ही होगा। साथ-ही-साथ जीवन-कौशल, चिन्तन कौशल, एवं भाव-कौशल के माध्यम से अतिरिक्त कौशलों का विकास करके जीवन की परिस्थितियों का अधिक परिपक्वता से सामना कर सकेंगे।

आज शिक्षकों की भूमिका में हमारे लिये यह आवश्यक है कि हम विद्यार्थियों में उच्च नैतिक मूल्यों का विकास करें और उनमें वह सकारात्मक (positive) अभिवृत्ति विकसित करें जो न उन्हें केवल अपने देश अपितु सम्पूर्ण विश्व का एक सुयोग्य और जिम्मेदार नागरिक बनने का आधार प्रदान करे। सामाजिक विज्ञान अध्ययन शिक्षक को इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये सतत् यत्नशील रहना चाहिए।

UWR
07/06/2020